

भारत सरकार
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
लोक सभा
अतारांकित प्रश्न सं. 1170
9 फरवरी, 2022 को उत्तर दिए जाने के लिए

तटरेखा का कटाव

1170. श्री नलीन कुमार कटील :

क्या पृथ्वी विज्ञान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (ग) क्या सरकार को ज्ञात है कि प्राकृतिक कारणों तथा मानव गतिविधियों के कारण देश की तट रेखा को भारी क्षति हुई है;
- (घ) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है ;
- (ङ) क्या सरकार का वैज्ञानिक तरीकों का उपयोग करके प्राकृतिक कारणों तथा मानव गतिविधियों के कारण कट रही तट रेखा के तट खंडों की पहचान के लिए कोई सर्वे कराने और इसके मापन करने का प्रस्ताव है;
- (च) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;
- (छ) क्या सरकार ने पुनर्स्थापन हेतु ऐसे तट रेखा खंडों की पहचान की है; और
- (ज) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है बड़े पैमाने पर हुए तटरेखा के कटाव पुनर्स्थापन के लिए कार्य-योजना क्या है ?

उत्तर

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
(डॉ. जितेंद्र सिंह)

(क) और (ख) जी हां। पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के एक अधीनस्थ कार्यालय राष्ट्रीय तटीय अनुसंधान केंद्र (एनसीसीआर), चेन्नई, ने 28 वर्ष (1990-2018) के उपग्रह और क्षेत्र सर्वेक्षण डेटा का उपयोग करके भारतीय तट के सामांतर तटरेखा परिवर्तन का अध्ययन किया है और पूरे भारतीय मुख्य भूमि तट को शामिल करने वाली 6,632 किमी लंबी तटरेखा का मानचित्रण किया है। अध्ययन ने तटरेखा परिवर्तन के एक दर्जन से अधिक कारणों की गणना की, उन्हें प्राकृतिक और मानवजनित कारणों के रूप में वर्गीकृत किया। यह पहचाना गया है कि, समुद्री तूफानी लहरें समुद्र के स्तर में वृद्धि प्राकृतिक कारणों के रूप में आती हैं और तट पर बंदरगाह, समुद्र तट खनन और नदियों पर बांधों का निर्माण जैसी अवस्थापनाएं तटरेखा परिवर्तन मुख्य मानवजनित कारण बनती हैं।

(ग) और (घ) जी हां। एनसीसीआर 28 वर्षों (1990-2018) की अवधि के लिए क्षेत्र-सर्वेक्षण डेटा के साथ-साथ मल्टी-स्पेक्ट्रल उपग्रह छवियों का उपयोग करके संपूर्ण भारतीय तटरेखा के लिए तटरेखा परिवर्तन की निगरानी कर रहा है। बताया गया था कि भारतीय समुद्र तट का 34% हिस्सा क्षरण के प्रति संवेदनशील था, 27% अभिवृद्धि (बढ़ रहा) था और 39% स्थिर स्थिति में था। भारतीय तट के लिए 1990-2018 के लिए तटरेखा परिवर्तन के डेटा निष्कर्ष और परिणाम अनुलग्नक 1 में दिए गए हैं। पर्यावरण वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के राष्ट्रीय सतत तटीय प्रबंधन केंद्र (एनसीएससीएम), चेन्नई ने भी तटीय क्षेत्रों के साथ तटरेखा परिवर्तन अध्ययन किया है। और उन गांवों/क्षेत्रों/हॉटस्पॉट की पहचान की, जिनमें अत्यधिक तटरेखा परिवर्तन देखा गया है और कटाव से गंभीर रूप से प्रभावित हैं।

(ड) और (च) जी हां। विश्व बैंक द्वारा वित्त पोषण किए जाने वाले पर्यावरण वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की एनकोर (तटीय और महासागर संसाधन दक्षता संवर्धन) परियोजना के तहत तटीय क्षेत्रों को शामिल करने वाले निम्नलिखित विशिष्ट प्रस्ताव/परियोजनाएं सरकार के विचाराधीन हैं।

- i. तटरेखा प्रबंधन योजनाओं की तैयारी सहित सभी तटीय राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के लिए एकीकृत तटीय क्षेत्र प्रबंधन योजनाएं।
- ii. हल्दी नदी, पुरबा मेदनीपुर जिला और दक्षिण हाजीपुर, पश्चिम बंगाल के लिए नदी तट संरक्षण योजनाएं।
- iii. ओडिशा के पुरी जिले में रामायपटना और मंगला नदी के पास तटीय सुरक्षा उपाय।
- iv. जलवायु परिवर्तन की स्थिति में इसकी स्थिरता का आकलन करने के लिए, चिल्का लैगून, ओडिशा के प्रवेश की बारीकी से निगरानी।
- v. ओडिशा में तटीय गांवों को प्रचंड चक्रवात/तूफानी लहरों और खारेपन से रोकने के लिए कैसुरीना वृक्षारोपण।
- vi. लक्षद्वीप द्वीप समूह के बसे हुए और निर्जन द्वीपों में तटीय सुरक्षा संरचनाओं डिजाइन करने के लिए तटीय प्रक्रिया अध्ययन

अनुलग्नक 1

क्र.सं.	राज्य	तट की लंबाई (किमी में)	तट की लंबाई (किमी में)						
			कटाव		स्थिर		वृद्धि		
			किमी	%	किमी	%	किमी	%	
1	पश्चिमी तट	गुजरात	1945.6	537.5	27.6	1030.9	53	377.2	19.4
2		दमन और दीव	31.83	11.02	34.6	17.09	53.7	3.72	11.7
3		महाराष्ट्र	739.57	188.26	25.5	477.69	64.6	73.62	10
4		गोवा	139.64	26.82	19.2	93.72	67.1	19.1	13.7
5		कर्नाटक	313.02	74.34	23.7	156.78	50.1	81.9	26.2
6		केरल	592.96	275.33	46.4	182.64	30.8	134.99	22.8
7	पूर्वी तट	तमिलनाडु	991.47	422.94	42.7	332.69	33.6	235.85	23.8
8		पुदुचेरी	41.66	23.42	56.2	13.82	33.2	4.42	10.6
9		आंध्र प्रदेश	1027.58	294.89	28.7	223.36	21.7	509.33	49.6
10		उड़ीसा	549.5	140.72	25.6	128.77	23.4	280.02	51
11		पश्चिम बंगाल	534.35	323.07	60.5	76.4	14.3	134.88	25.2
कुल		6907.18	2318.31	2733.86		1855.03			
%			33.6	39.6		26.9			
